शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहु विषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year – 1
Vol – 4
February
2024

# बुंदेलखंड का *अभ्युदय* : अतीत एवं वर्तमान परिदृश्य

**पंकज द्विवेदी**[1] (एसोसिएट प्रोफेसर), जनता महाविद्यालय, अजीतमल (औरैया)
**आशुतोष तिवारी**असिस्टेंट प्रोफेसर) [2]) पंडित जवाहर लाल नेहरू महाविध्यालय, बाँदा
**स्कन्द द्विवेदी**,[3] पंडित पृथीनाथ महाविद्यालय (कानपुर)

पुरातात्विक साहित्यिक शोधों कि विपुलता ने इतने नये तथ्य प्रस्तुत किए हैं कि भारतवर्ष के समग्र इतिहास से पनरालेखन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। "बुंदेलखंड'का इतिहास भी इसी प्रकार नयी शोधों के संदर्भ में आलेखन की अपेक्षा रखता है। "बुंदेलखंड'शब्द मध्यकाल से पहले इस नाम से प्रयोग में नहीं आया है। इसके विविध नाम और उनके उपयोग आधुनिक युग में ही हुए हैं। बीसवीं शती के प्रारंभिक दशक में रायबहादुर महाराजसिंह ने बुंदेलखंड का इतिहास लिखा था। इसमे बुंदेलखंड के अन्तर्गत आने वाली जागीरों और उनके शासकों के नामों की गणना मुख्य थी। दीवान प्रतिपाल सिंह ने तथा पन्ना दरबार के प्रसिद्ध कवि "कृष्ण'ने अपने स्रोतों से बुंदेलखंड के इतिहास लिखे परन्तु वे विद्वान भी सामाजिक सांस्कृतिक चेतनाओं के प्रति उदासीन रहे।

पं० हरिहर निवास द्विवेदी ने "मध्य भारत का इतिहास'ग्रंथ में बुंदेलखंड की राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उपलब्धियों की चर्चा प्रकारांतर से की है। इस ग्रंथ में कुछ स्थानों पर बुंदेलखंड का इतिहास भी आया है। एक उत्तम प्रयास पं० गोरेलाल तिवारी ने किया और "बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास'लिखा जो अब तक के ग्रंथो से सबसे अलग था परन्तु तिवारीजी ने बुंदेलखंड का इतिहास समाजशास्त्रीय आधार पर लिख कर केवल राजनैतिक घटनाओं के आधार पर लिखा है।

बुंदेलखंड सुदूर अतीत में शबर, कोल, किरात, पुलिन्द और निषादों का प्रदेश था। आर्यों के मध्यदेश में आने पर जन जातियों ने प्रतिरोध किया था। वैदिक काल से बुंदेलों के शासनकाल तक दो हज़ार वर्षों में इस प्रदेश पर अनेक जातियों और राजवंशं ने शासन किया है और अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना से इन जातियों के मूल संस्कारों को प्रभावित किया है। विभिन्न शासकों में मौर्य, सुंग, शक, हुण, कुषाण, नाग, वाकाटक, गुप्त, कलचुरि, चन्देल, अफगान, मुगल, बुंदेला, बघेल, गौड़, मराठ और अंग्रेज मुख्य हैं।ई० पू० ३२१ तक वैदिक काल से मौर्यकाल तक का इतिहास वस्तुत: बुंदेलखंड का "पौराणिक-इतिहास'माना जा सकता है। इसके समस्त आधार पौराणिक ग्रंथ है।

**पौराणिक इतिहास**

समस्त भारतीय इतिहासों में "मनु'मानव समाज के आदि पुरुष हैं। इनकी ख्याति कोसल देश में अयोध्या को राजधानी बनाने और उत्तम-शासन व्यवस्था देने में है। महाभारत और रघुवंश के आधार पर माना जाता है कि मनु के उपरांत इस्वाकु आऐ और उनके तीसरे पुत्र दण्डक ने विन्धयपर्वत पर अपनी राजधानी बनाई धी । मनु के समानान्तर बुध के पुत्र पुरुखा माने गए हैं इनके प्रपौत्र ययति थे जिनके ज्येष्ठ पुत्र यदु और उसके पुत्र कोष्टु भी जनपद काल में चेदि (वर्तमान बुंदेलखंड) से संबंद्ध रहे हैं। एक अन्य परंपरा कालिदास के "अभिज्ञान शाकुंतल'से इस प्रकार मिलती है कि दुष्यंत के वंशज कुरु थे जिनके दूसरे पुत्र की शाखा में राजा उपरिचर-वसु हुए थे । इनकी ख्याति विशेष कर शौर्य के कारण हुई है। इनके उत्तराधिकारियों को भी चेदि, मत्स्य आदि प्रांतो से संबंधितमाना गया है। बहरहाल पौराणिक काल में बुंदेलखंड प्रसिद्ध शासकों के अधीन रहा है जिनमें चन्द्रवंशी राजाओं की विस्तृत सूची मिलती है। पुराणकालीन समस्त जनपदों की स्थिति बौद्धकाल में भी मिलती है। चेदि राज्य को प्राचीन बुंदेलखंड माना जा सकता है। बौद्धकाल में शाम्पक नामक बौद्ध ने बागुढ़ा प्रदेश में भगवान बुद्द के नाखून और बाल से एक स्तूप का निर्माण कराया था। वर्तमान मरहूत (वरदावती नगर) में इसके अवशेष विद्यमान हैं। पौराणिक युग का चेदि जनपद ही इस प्रकार प्राचीन बुंदेलखंड है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहु विषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year – 1
Vol – 4
February
2024

**मौर्यकाल**

वर्तमान खोजों तथा प्राचीन वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, भित्तिचित्रों आदि के आधार पर कहा जा सकता है कि जनपद काल के बाद प्राचीन चेदि जनपद बाद में पुलिन्द देश के साथ मिल गया था ।सबसे प्राचीन साक्ष्य "एरन'की परातात्विक खोजों और उत्खननों से उपलब्ध हुए हैं। ये साक्ष्य ३०० ई० पू० के माने गए हैं। इस समय एरन का शासक धर्मपाल था जिसके संबंधमें मिले

सिक्कों पर "एरिकिण'मुद्रित है। त्रिपुरी और उज्जयिनि के समान एरन भी एक गणतंत्र था । मौर्यशासन के आते ही समस्त बुंदेलखंड (जिनमें एरन भी था) उसमे विलीयत हुआ। मत्स्य पुराण और विष्णु पुराण में मौर्य शासन के १३० वर्षों का यह साक्ष्य है, मौर्य वंश के तीसरे राजा अशोक ने बुंदेलखंड के अनेक स्थानों पर विहारों, मठों आदि का निर्माण कराया था । वर्तमान गुर्गी (गोलकी मठ) अशोक के समय का सबसे बड़ा विहार था। बुंदेलखंड के दक्षिणी भाग पर अशोक का शासन था जो उसके उज्जयिनी तथा विदिशा मे रहने से प्रमाणित है। परवर्ती मौर्यशासक दुर्बल थे और कई अनेक कारण थे जिनकी वजह से अपने राज्य की रक्षा करने मे समर्थ न रहै फलत: इस प्रदेश पर शुङ्ग वंश का कब्जा हुआ। इन्होंने ३६ वर्षों तक इस क्षेत्र में राज्य किया। इसके उपरांत गर्दभिल्ला और नागों का अधिकार इस प्रदेश पर हुआ। भागवत पुराण और वायुपुराण में किलीकला क्षेत्र का वर्णन आया है। ये किलीकला क्षेत्र और राज्य विन्ध्यप्रदेश (नागौद) था। नागों द्वारा स्थापित शिवाल्यों के अवशेष भ्रमरा (नागौद) बैजनाथ (रीवाँ के पास) कुहरा (अजयगढ़) में अब भी मिलते हैं।

**वाकाटक और गुप्तशासन**

वाकाटक वंश का सर्वश्रेष्ठ राजा विन्ध्यशक्ति का पुत्र प्रवरसेन था। इसने अपने साम्राजय का विस्तार उत्तर में नर्मदा से आगे तक

किया था। सन ३४५ से वाकाटक गुप्तों के प्रभाव में आये और पाँचवीं शताब्दी के मध्य तक उनके आश्रित रहे हैं। कतिपय विद्वान विन्ध्यशक्ति के समय से सन् २५५ तक वाकाटकों का काल मानते हैं। ये झाँसी के पास बागाट स्थान से उद्भूत है अत: बुंदेलखंड से इनका विशेष संबंध रहा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग जिस समय बुंदेलखंड में आया था, उस समय भारतीय नेपोलियन समुद्रगुप्त का शासनकाल था। उसने वाकाटकों को अपने अधीन कर लिया था । कलचुरियों के उद्भव का समय भी इसी के आसपास माना गया है। गुप्तों के समय में बुंदेलखंड एक वैभवशाली प्रदेश था । सुश्मिचंद्र ने मैत्रायणीय शाखा के मातृविष्णु और धान्य विष्णु ब्राह्मणों

को एरन का शासक बनाया था जिसकी पुष्टि "एरण'के स्तम्भ से होती है। सुश्मिचंद्र गुप्त का शासन यमुना और नर्मदा के बीच के भाग पर माना गया है।

गुप्तों की अधीनता स्वीकार करने वालों में उच्छकल्प और परिव्राजकों का नाम लिया जाता है। पाँचवी शताब्दी के आसपास उच्छकल्पों की राजसत्ता की स्थापना हुई थी। उच्छकल्पों की राजधानी "उच्छकल्प' (वर्तमान ऊँचेहरा) में थी। इनके शासन में आने वाले भूभाग के "महाकान्तर' प्रदेश कहा जाता है। इसी के पास परिव्राजकों की राजधानी थी। विक्रम की चौथी सदी में परिव्राजकों ने अपने राज्य की स्थापना की थी। इनका राज्य वम्रराज्य भी कहा जाता है। वम्रराज्य पर बाद में नागौद के परिहारों ने अपना शासन जमा लिया था। पाँचवी शताब्दी के अंत तक हूण शासकों द्वारा बुंदेलखंडका शासन करना इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। हूणों का प्रमुख तोरमाण था जिसने गुप्तों को पराजित करके पूर्वी मालवा तक अपना साम्राज्य बढ़ाया था। चीनी यात्री ह्यानसांग के यात्रा विवरण में बुंदेलखंडका शासन ब्राह्मण राजा के द्वारा चलाया जाना बताया गया है। बुंदेलखंडको ह्यष साम्राजय् के बाहर माना गया है। कालांतर में ब्राह्मण राजा ने स्वयं हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली थी। हर्ष के उपरांत अराजकता की स्थिती में बुंदेलखंडधार नरेश भोज के अधिकार में आया। वाकाटक वंश का सर्वश्रेष्ठ राजा विन्ध्यशक्ति का पुत्र प्रवरसेन था। इसने अपने साम्राजय का विस्तार उत्तर में नर्मदा से आगे तक किया था। सन ३४५ से वाकाटक गुप्तों के प्रभाव में आये और पाँचवीं शताब्दी के मध्य तक उनके आश्रित रहे हैं। कतिपय विद्वान विन्ध्यशक्ति के समय से सन् २५५ तक वाकाटकों का काल मानते हैं। ये झाँसी के पास बागाट स्थान से उद्भूत है अत: बुंदेलखंडसे इनका विशेष संबंध रहा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग जिस समय बुंदेलखंडमें आया था, उस समय भारतीय नेपोलियन समुद्रगुप्त का शासनकाल था। उसने वाकाटकों को अपने अधीन कर लिया था। कलचुरियों के उद्भव का समय भी इसी के आसपास माना गया है। गुप्तों के समय में बुंदेलखंडएक वैभवशाली प्रदेश था। सुश्मिचंद्र ने मैत्रायणीय शाखा के मातृविष्णु और धान्य विष्णु ब्राह्मणों को एरन का शासक बनाया था जिसकी पुष्टि "एरण'के स्तम्भ से होती है। सुश्मिचंद्र गुप्त का शासन यमुना और नर्मदा के बीच के भाग पर माना गया है।

गुप्तों की अधीनता स्वीकार करने वालों में उच्छकल्प और परिव्राजकों का नाम लिया जाता है। पाँचवी शताब्दी के आसपास उच्छकल्पों की राजसत्ता की स्थापना हुई थी। उच्छकल्पों की राजधानी "उच्छकल्प' (वर्तमान ऊँचेहरा) में थी। इनके शासन में आने वाले भूभाग के "महाकान्तर' प्रदेश कहा जाता है। इसी के पास परिव्राजकों की राजधानी थी। विक्रम की चौथी सदी में परिव्राजकों ने अपने राज्य की स्थापना की थी। इनका राज्य वम्रराज्य भी कहा जाता है। वम्रराज्य पर बाद में नागौद के परिहारों ने अपना शासन जमा लिया था। पाँचवी शताब्दी के अंत तक हूण शासकों द्वारा बुंदेलखंडका शासन करना इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। हूणों का प्रमुख तोरमाण था जिसने गुप्तों को पराजित करके पूर्वी मालवा तक अपना साम्राज्य बढ़ाया था। चीनी यात्री ह्यानसांग के यात्रा विवरण में बुंदेलखंडका शासन ब्राह्मण राजा के द्वारा चलाया जाना बताया गया है। बुंदेलखंडको ह्यष साम्राजय् के बाहर माना गया है। कालांतर में ब्राह्मण राजा ने स्वयं हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली थी। हर्ष के उपरांत अराजकता की स्थिती में बुंदेलखंडधार नरेश भोज के अधिकार में आया।

**कलचुरियों का शासन**

बुंदेलखंडमें कलचुरियों और चन्देलों का प्रभाव दीर्घकाल तक रहा।कलचुरियों की दो शाखायें हैं – रत्नपुर के कलचुरि और त्रिपुरी के कलचुरि। बुंदेलखंडमें त्रिपुरी के कलचुरियों का महत्व है। यह वंश पुराणों में प्रसिद्ध हैध्यवंशी कार्तवीर्य अर्जुन की परंपरा में माना जाता है। इसके संस्थापक महाराज कोक्कल ने (जबलपुर के पास) त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया अतएव यह वंश त्रिपुरी

के कलचुरियों के नाम से विख्यात है। प्राचीन काल में नर्मदा के शीर्ष स्थानीय प्रदेश से महानदी के प्रदेश का विस्तृत भूभाग चेदि जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। मध्यकाल में इसे "डहाल' कहा जाने लगा।

**चन्देलों का शासन**

महोबा चन्देलों का केन्द्र था,चन्देलों की उत्पति विवादास्पद है। डॉ स्मिथ, कीनंधम, वैद्य और हेमचंद्र राय के मतों में बहुत भिन्नता है। चन्देलों की अपनी परंपरा है। नन्नुक आदि शासक हैं। इसके बाद वाक्यपति का नाम आता है। वाक्यपति के दो पुत्र हुए जयशक्ति और विजयशक्ति। जयशक्ति को वाक्यपति के बाद सिंहासन में बैठाया गया और इसके नाम से ही बुंदेलखंडक्षेत्र का नाम "जेजाक-मुक्ति' पड़ा। मदनपुर के शिलालेख और अलबेरुनी के भारत संबंधी यात्रा विवरण में इस तथ्य को समर्थन मिलता है। अलबरुनी ने जेजाक मुक्ति के स्थान पर "जेजाहुति'शब्द का प्रयोग किया है।जयशक्ति के बाद विजयशक्ति गद्दी पर बैठा। इसने कोई महत्वपूर्ण कार्य नही किए परन्तु उसके पुत्र राहील की ख्याति अपने पराक्रम के लिए विशेष है। केशव चन्द्र मिश्र ने लिखा है कि "यदि चन्देल शासक राहील के कार्यों का सिंहावलोकन किया जाये तो ज्ञात होगा कि ९०० ई० से ९१५ ई० तक के १५ वर्षों के शासन काल मे उसने सैन्यबल संगठित किया, उसे महत्वाशाली बनाया और अजयगढ़ की विजय करके ऐतिहासिक सैनिक केन्द्र स्थापित किया। चन्देलों ने सोलहवीं शताब्दी तक शासन किया। शासकों में प्रमुख इस प्रकार हैं ,चन्देलों के साथ दुर्गावती का भी नाम लिया जाता है।चन्देल काल में बुंदेलखंड में मूर्तिकला, वास्तुकला तथा अन्य कलाओं का विशेष विकास हुआ। "आल्हा'के रचयिता जगीनक माने जाते हैं। ये चन्देलों के सैनिक सलाहकार भी थे। पृथ्वीराज से चन्देलों से संबंध भी आल्हा में दर्शाये गये हैं। सन् ११८२-८३ में चौहानों ने चन्देलों को सिरसागढ़ में पराजित किया था और कलिन् का किला लूटा था।चन्देलों की कीर्ति के अनेक शिलालेख हैं। देवगढ़ के शिलालेख में चन्देल वैभव दर्शाया है चन्देल अभिलेख से स्पष्ट है कि परमार नरेश भोज के समय मे विदेशी आक्रमणकारियों का ताँता लग गया था । कलिं को लूटने के लिए मुहम्मद कासिम, महमूद गज़नवी, शहाबुद्दीन गौरी आदि आर्य और विपुलधन अपने साथ ले गये। कुतुबुद्दीनएबक मुहम्मद गौरी के द्वारा यहां का शासक बनाया गया था उसके मरने के बाद स्वतंत्र हुआ और चंगेजखाँ के आक्रमण तक शासक बना रहा।बुंदेलखंड में कलिं का किला सभी बादशाहों को आकर्षण का केन्द्र रहा और इसे प्राप्त करने के सभी ने प्रयत्न किया। हिन्दु और मुसलमान राजाओं में इसके निमित्त अनेक लड़ाईयां हुईं खिलजी वंश का शासन संवत् १३७७ तक माना गया है। अलाउद्दीन खिलजी को उसके मंत्री मलिक काफूर ने मारा, मुबारक के बनने पर खुसरो ने उसे समाप्त किया। कलिंजर और अजयगढ़ चन्देलों के हाथ में ही रहे।

इसी समय नरसिंहराय ने ग्वालियर पर अपना अधिकार किया। बाद में य तोमरों के हाथ में चला गया। मानसी तोमर ग्वालियर के प्रसिद्ध राजा माने गए हैं।बुंदेलखंड के अधिकांश राजाओं ने अपनी स्वतंत्र सत्ता बनानी प्रारंभ कर दी थी फिर वे किसी न किसी रुप में दिल्ली के तख्त से जुड़े रहते थे। बाबर के बाद हुमायूँ, अकबर, जहांगीर और शाहजहाँ के शासन स्मरणीय है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहु विषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year – 1
Vol – 4
February
2024

**बुंदेलों का शासन**

बुंदेल क्षत्रीय जाति के शासक थे तथा सुदूर अतीत में सूर्यवंशी राजा मनु से संबन्धित हैं। अक्ष्वाकु के बाद रामचन्द्र के पुत्र "लव'से उनके वंशजो की परंपरा आगे बढ़ाई गई है और इसी में काशी के गहरवार शाखा के कर्त्तृराज को जोड़ा गया है। जिसमें काशी मे ऊपर ग्रहों की बुरी दशा के निवारणार्थ उसके प्रयत्नों में "ग्रहनिवार'संज्ञा से वह पुकारा जाने लगा था।

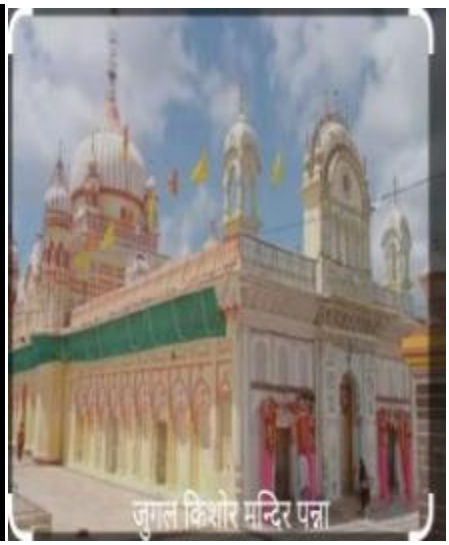


कालांतर "ग्रहनिवार' गहरवार बन गया। बनारस के राजाओं की अनेक समय तक सूर्यवंशी सूर्य-कुलावंतस काशीश्वर पुकारा जाता। एक कथा के अनुसार हेमकरन ने देवी के समक्ष अपनी गर्दन पर जब तलवार रखी और स्वयं की बलि देनी चाही तो देवी ने उसे रोक दिया परंतु तलवार की धार से हेमकरन के रक्त की पांच बूंदें गिर गई थीं इन्हीं के कारण हेमकरन का नाम पंचम बुंदेला पड़ा था। ओरथा दरबार के पत्र में अभी भी पूर्ववर्ती विरुद्ध के प्रमाण मिलते हैं जैसे - श्री सूर्यकुलावतन्स काशीश्वरपंचम ग्रहनिवार विन्ध्यलखण्डमण्लाहीश्वर श्री महाराजाधिराज ओरछा नरेश। चूंकि हेमकरन को विन्ध्यवासिनी देवी का वरदान रविवार को मिला था, ओरछा में आज भी पवरात्र महोत्सव में इस दिन नगाड़े बनाये जाते हैं। मिर्जापुर स्थित गौरा भी हेमकरन के बाद गहरवारपुरा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद का चक्र बड़ी तेजी से घूमा और वीरभद्र ने गदौरिया राजपूतों मे अँटेर छीन लिया और महोनी को अपनी राजधानी बनाया। गढ़कुण्डार इसके बाद बुंदेलों की राजधानी बनी। वीरभद्र के पाँच विवाह और पाँच पुत्र प्रसिद्ध हैं - इनमें रणधीर द्वितीय रानी से, कर्णपाल तृतीय रानी से, हीराशी, हंसराज और कल्याणसिंह पँचम रानी से थे। वीरभद्र के बाद कर्णपाल (१०८७ ई० से १११२ ई०) गद्दी पर बैठा। उसकी चार पत्नियाँ थीं। प्रथम के कन्नारशाह, उदयशाह और जामशाह पैदा हुए। द्वितीय पत्नी से शौनक देव तथा नन्नुकदेव तथा चतुर्थ पत्नी से वीरसिंहदेव का जन्म हुआ।कन्नारशाह (१११२ ई० - ११३० ई०), शौनकदेव (११३० ई०-११५२ ई०), नन्नुकदेव (११५२ई०-११६९ ई०) ओरछा की गद्दी पर क्रम से बैठे। इसके बाद वीरसिंह के पुत्र मोहनपति (११६९ ई०-११९७ ई०), अभयभूपति (११६९ ई०-१२१५ ई०) गद्दी पर आये। अर्जुनपाल अभयभूपति का पुत्र था। ये १२१५ ई० से १२३१ ई० तक गद्दी पर रहा। उसने तीन विवाह किए। दूसरी रानी से सोहनपाल का जन्म हुआ। यह ओरछा बसाने में विशेष सहायक माना जता है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहु विषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year – 1
Vol – 4
February
2024

**ओरछा के बुंदेला**

रुद्रप्रताप के साथ ही ओरछा के शासकों का युगारंभ होता है। वह सिकन्दर और इब्राहिम लोधी दोनों से लड़ा था। ओरछा की स्थापना मन १५३० में हुई थी। रुद्रप्रताप बड़ नीतिज्ञ था, ग्वालियर के तोमर नरेशों से उसने मैत्री संधी की। उसके मृत्यु के बाद भारतीचन्द्र (१५३१ ई०-१५५४ई०) गद्दी पर बैठा। हुमायूँ को जब शेरशाह ने पदच्युत करके सिंहासन कथियाया था तब उसने बुंदेलखंड के जतारा स्थान पर दुर्ग बनवा कर हिन्दु राजाओं को दमित करने के निमित्त अपने पुत्र सलीमशाह को रखा। कलिं का किला कीर्तिसिंह चन्देल के अधिकार में था। शेरशाह ने इस पर किया तो भारतीचन्द ने कीर्तिसिंह की सहायता ली। शेरशाह युद्ध में मारा गया और उसके पुत्र सलीमशाह को दिल्ली जाना पड़ा।

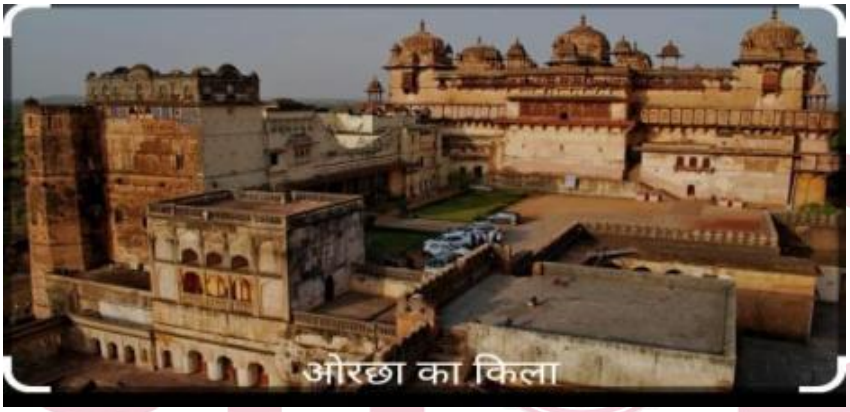


भारतीचन्द के उपरांत मधुकरशाह (१५५४ ई०-१५९२ ई०) गद्दी पर बैठा। इसके बाद समय में स्वतंत्र ओरछा राज्य की स्थापना हुई। अकबर के बुलाने पर जब वे दरबार में नही पहुँचा तो सादिख खाँ को ओरछा पर चढ़ाई करने भेजा गया। युद्ध में मधुकरशाह हार गए। मधुकरशाह के आठ पुत्र थे, उनमें सबसे ज्येष्ठ रामशाह के द्वारा बादशाह से क्षमा याचना करने पर उन्हें ओरछा का शासक बनाया गया। राज्य का प्रबन्ध उनके छोटे भाई इन्द्रजीक किया करते थे। केशवदास नामक प्रसिद्ध कवि इन्हीं के दरबार में थे।

इन्द्रजीत का भाई वीरसिंह देव (जिसे मुसलमान लेखकों ने नाहरसिंह लिखा है) सदैव मुसलमानों का विरोध किया करता था) उसे कई बार दबाने की चेष्टा की गई पर असफर ही रही। अबुलफज़ल को मारने में वीरसिंहदेव ने सलीम का पूरा सहयोग किया था, इसलिए वह सलीम के शासक बनते ही बुंदेलखंड का महत्वपूर्ण शासक बना। जहाँगीर ने इसकी चर्चा अपनी डायरी में की है। वीरसिंह देव (१६०५ ई० - १६२७ ई०) के शासनकाल में ओरछा में जहाँगीर महल तथा अन्य महत्वपूर्ण मंदिर बने थे। जुझारसिंह ज्येष्ठ पुत्र थे, उन्हें गद्दी दी गई और षेष ११ भाइयों को जागीरें दी गई। सन् १६३३ ई० में जुझारसिंह ने गोड़ राजा प्रेमशाह पर आक्रमण करके चौरागढ़ जीता परंतु शाहजहाँ नें प्रत्याक्रमण किया और ओरछा खो बैठे। उन्हें दक्षिण की ओर भागना पड़ा। उनके कुमारों को मुसलमान बनाया गया तथा वे कहीं पर दक्षिण में ही मारे गये। वीरसिंह के बाद ओरछा के शासकों में देवीसिंह और पहाड़सिहं का नाम लिया जाता है परंतु ये अधिक समय तक राज न कर सके।

वीरसिंह के उपरांत चम्पतराय प्रताप का इतिहास प्रसिद्ध है। औरंगज़ेब की सहायता करने (दारा के विरुद्ध) पर उन्हें ओरछा से जमुना तक का प्रदेश जागीर में दिया गया था। दिल्ली दरबार के उमराव होते हुए भी चम्पतराय ने बुंदेलखंड को स्वाधीन करने का प्रयत्न किया और वे औरंगज़ेब से ही भीड़ गए। सन १६६४ मे चम्पतराय ने आत्महत्या कर ली। ओरछा दरबार का प्रभाव यहाँ से शून्य हो जाता है।

पन्ना दरबार इसी के बाद छत्रसाल के नेतृत्व में उन्नति करता है। ओरछा गज़ेटियर के अनुसार मुगल शासकों नें चम्पतराय के परिवार को गद्दी न दी और जुझारसिंह के भाई पहाड़सिंह को शासक नियुक्त किया। ओरछा के परवर्ती शासकों ने सुजानसिंह (१६५३ ई०-१६७२ ई०), इन्द्रमीण (१६७२ ई०-१६७५ ई०), यशवंत सिंह (१६७५ ई०-१६८४ ई०), भगवंत सिंह (१६८४ ई० - १६८९ ई०), उद्योतसिंह, दत्तक पुत्र (१६८९ ई०-१७३६ ई०), पृथ्वी सिंह (१७३६ ई०-१७५२ ई०), सावंत सिंह (१७५२ ई०-१७६५ ई०) तथा हतेसिंह विक्रमाजीत, धरमपाल, तेजसिंह, हमीरीसिंह, प्रतापसिंह के नाम प्रमुख हैं।

छत्रसाल ने बुंदेलखंड की स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने में अथक परिश्रम किया। औरंगज़ेब ने इन्हें भी दबाने की कोशिश की पर सफल न हुए। छत्रसाल ने कलिं को भी अपने अधिकार में किया। सन् १७०७ ई० सें औरंगज़ेब के मरने के बाद बहादुरगढ़ गद्दी पर बैठा। छत्रसाल से इसकी खूब बनी। इस समय मराठों का भी ज़ोर बढ़ गया था। छत्रसाल स्वयं कवि थे। छत्तरपुर इन्हीं ने बसाया था। कलाप्रेमी और भक्त के रुप में भी इनकी ख्याती थी। धुवेला-महल इनकी भवन निर्माण-कला की स्मृति दिलाता है। बुंदेलखंड की शीर्ष उन्नति इनके काल में हुई। छत्रसाल की मृत्यु के बाद बुंदेलखंड राज्य भागों में बँट गया। एक भाग हिरदेशाह, दूसरा जगतराय और तीसरा पेशवा को मिला। छत्रसाल की मृत्यु १३ मई सन् १७३१ में हुई थी।

(क) प्रथम हिस्से में हिरदेशाह को पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कलिंजर, शाहगढ़ और उसके आसपास के इलाके मिले।
(ख) द्वितीय हिस्से में जगतराय को जैतपुर, अजयगढ़, जरखारी, बिजावर, सरोला, भूरागढ़ और बाँदा मिला।
(ग) बाजीराव को तीसरे हिस्से में कलपी, हटा, हृदयनगर, जालौन, गुरसाय, झाँसी, गुना, गढ़कोटा और सागर इत्यादि मिला।

अठारवीं शताब्दी में हिन्दुपत के वंशज सोनेशाह ने छत्तरपुर की स्थापना की। कृष्णकवि (पन्ना दरबार के राजकवि) ने इसे छत्रसाल द्वारा बसाया माना है। जबकि छत्तरपुर गजेटियर में इसे सोनोशाह का नाम ही दिया है। सोनेशाह के बाद छत्तरपुर राज्य में प्रतापसिंह, जगतराज और विश्वनाथसिंह आदि राजाओं ने शासन किया। सोनेशाह के समय में छत्तरपुर में अनेक महलों, तालाबों, मन्दिरों का निर्माण करवाया।

**मराठों का शासन**

छत्रसाल के समय से ही मराठों का शासन बुंदेलखंड पर प्रारंभ हो गया था। उस समय ओरछा का शासक भी मराठों को चौथ देता था। दिल्ली के मुसलमान शासकों द्वारा अराजकता फैलाने के कारण उत्तर भारत में धीमे-धीमे अंग्रेजी शासन फैलता जा रहा था। सन् १७५९ में अहमदशाह अब्दाली के विरुद्ध युद्ध में गोविन्दराव पतं मारे गए। बुंदेलखंड में अंग्रेजों का आगमन हानिकारक सिद्ध हुआ। कर्नल वेलेजली ने सन् १७७८ में कलपी पर आक्रमण किया और मराठों को हराया। कालांतर में नाना फड़नवीस की सलाह मे माधव नारायण को पेशवा बनाया गया तथा मराठों और अंग्रेजों में संधि हो गई।हिम्मत बहादुर की सहायता से अंग्रेजों नें बुंदेलखंड पर कब्जा किया। सन् १८१८ ई० तक बुंदेलखंड के अधिकांश भाग अंग्रेजों के अधीन हो गए।

**बुंदेलखंड मे राजविद्रोह**

झाँसी में गंगाधरराव की मृत्यु के बाद दामोदर राव को गोद लिया गया। लक्ष्मी बाई को हटाने के प्रयत्न भी जारी हो गए परंतु इसी समय १८५७ के विद्रोह की घटना घटी। बरहमपुर, मेरठ, दिल्ली, मुर्शीदाबाद, लखनऊ, इलाहाबाद, काशी, कानपुर, झाँसी में विद्रोह हुआ और कई स्थान पर उपद्रव हुए। झाँसी पर विद्रोहियों ने किले पर अपना अधिकार जमाया और रानी लक्ष्मीबाई ने किसी

प्रकार युद्ध करके अपना अधिकार जमाया और रानी लक्ष्मीबाई कहलाई।सागर की ४२ न० पलटनने अंग्रेजी हुकूमत मानना अस्वीकार कर दिया। बानपुर के महाराज मर्दनसिंह ने अंग्रेजी अधिकार के परगनों पर कब्जा करना प्रारंभ कर दिया। खुरई का अहमदबख्श तहसीलदार भी मर्दनसिंह मे मिल गया। ललितपुर, चंदेरी पर दोनों ने कब्जा किया। शाहगढ़ में बख्तवली ने अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित की। सागर की ३१ नं० पलटन चूंकि बागी न थी इसीलिए उसकी सहायता से मर्दनसिंह की मालथौन में डटी हुई सेना को हटाया गया, फिर ४२ नं० पलटन से युद्ध हुआ।बख्तवली नें ३१ नं० पलटन ने शेखरमजान से मेल कर लिया विद्रोह की लहर, सागर, दमोह, जबलपुर आदि स्थानों में फैल गई। इस समय तक पन्ना के राजा की स्थिती मजबूत थी, अंग्रेजों ने उनसे सहायता माँगी। राजा ने तुरन्त सेना पहुँचाई और जबलपुर की ५२ नं० की पलटन को बुरी तरह दबा दिया गया। शनै: शनै: बख्तवली और मर्दनसिंह को नरहट की घाटी में सर हारोज ने पराजित किया। अंग्रेजी सेना झाँसी की ओर बढ़ती गई। झाँसी, कालपी में अंग्रेजों को डटकर मुकाबला करना पड़ा। रानी लक्ष्मी बाई दामोदर राव (पुत्र) को अपनी पीठ पर बाँधकर मर्दाने वेश में कालपी की ओर भाग गयी। इसके बाद झाँसी पर भी अंग्रेजों का अधिकार हो गया। कालपी में एक बार फिर बख्तवली और मर्दनसिंह ने रानी के साथ मिलकर सर ह्यूरोज से युद्ध किया। यहाँ भी उसे पराजय हाथ लगी। वह ग्वालियर पहुँची और सिंधिया को हराकर वहाँ भी शासक बन बैठी पर सर ह्यूरोज ने ग्वालियर पर अचानक हमला किया। राव साहब पेशवा, तात्या टोपे का पराभव, रानी की मृत्यु आदि ने पूर्णत: विद्रोह की अग्नि को ठंडा कर दिया। बुंदेलखंडके सारे प्रदेश इस प्रकार अंग्रेजी राज्य में समा गए।

**अंग्रेजी राज्य में विलयन**

बुंदेलखडं की सीमायें छत्रसाल के समय तक अत्यंत व्यापक थीं, इस प्रदेश में उत्तर प्रदेश के झाँसी, हमीरपुर, जालौन, बाँदा, मध्यप्रदेश के सागर, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, मण्डला तथा मालवा संघ के शिवपुरी, कटेरा, पिछोर, कोलारस, भिण्ड, लहार और मोण्डेर के जिले और परगने शामिल थे। इस पूर भूभाग का क्षेत्रफल लगभग ३००० वर्गमील था। अंग्रेजी राज्य में आने से पूर्व बुंदेलखंड में अनेक जागीरें और छोटे छोटे राज्य थे। बुंदेलखंड कमिश्नरी का निर्माण सन् १८२० में हुआ। सन् १८३५ में जालौन, हमीरपुर, बाँदा के जिलों को उत्तर प्रदेश और सागर के जिले को मध्यप्रदेश में मिला दिया गया, जिसकी देख रेख आगरा से होती थी। सन् १८३९ में सागर और दामोह जिले को मिलाकर एक कमिश्नरी बना दी गई जिसकी देखरेख झाँसी से होती थी। कुछ दिनों बाद कमिश्नरी का कार्यालय झाँसी से नौगाँव आ गया। सन् १८४२ में सागर, दामोह जिलों में अंग्रेजों के खिलाफ बहुत बड़ आन्दोलन हुआ परंतु फूट डालने की नीति के द्वारा शान्ति स्थापित की गई। इसके बाद बुंदेलखंडका इतिहास अंग्रेजी साम्राज्य की नीतियों की ही अभिव्यक्ति करता है। अनेक शहीदों ने समय समय पर स्वतंत्रता के आन्दोलन छेड़े परंतु गाँदी जी जैसे नेता के आने से पहले कुछ ठोस उपलब्धि संभव न हुई।बुंदेलखंडका इतिहास आदि से अंत तक विविधताओं से भरा है परंतु सांस्कृतिक और धार्मिक एकता की यहाँ एक स्वस्थ परंपरा है।

**बुंदेलखंडमें विकास की लहर**

दशकों की उपेक्षा ने बुंदेलखंडके जन जीवन को कठिन बना दिया था। यहां की मूलभूत समस्यों के समाधान पर उचित ध्यान नहीं दिया गया था। नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद बुंदेलखंड के विकास हेतु कार्य योजना बनाई। लेकिन इसका प्रभावी क्रियान्वयन योगी सरकार बनने के बाद शुरू हुआ। बुंदेलखंडबुंदेलखंडऐतिहासिक विरासत,वीरता,शौर्य और प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध रहा है किंतु विगत कई दशकों से यहां के विकास पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। पानी का संकट, कृषि की बदहाली, पलायन, भूखे पशु आदि को लेकर यह क्षेत्र चर्चित होने लगा। नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद यहां के विकास पर

विशेष ध्यान दिया।बुंदेलखंड का कुछ हिस्सा मध्य प्रदेश में है। यहां शिवराज सिंह सरकार ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये जिससे अनेक समस्याओं का समाधान हुआ। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री बनने के बाद केंद्र की योजनाओं को बुंदेलखंड में प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया। इससे यहां विकास का नया अध्याय शुरू हुआ। इसके पहले बुंदेलखंड के सभी घरों में नल से जल की कल्पना करना भी मुश्किल था। वर्तमान सरकार के प्रयासों से यह सपना साकार हो रहा है। बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे और डिफेंस कॉरिडोर से यहां के विकास को नया आयाम मिल रहा है। झांसी में तीन प्लेटफॉर्म रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन डीआरडीओ, डीपीएसयू,रक्षा उद्योग और स्टार्टअप के योगदान के साथ भारतीय रक्षा उद्योग की प्रगति के प्रमाण है। उत्तर प्रदेश भी आत्मनिर्भर भारत अभियान में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह कर रहा है।योगी आदित्यनाथ स्वयं इसके प्रति गंभीरता से प्रयास कर रहे है। यहां युद्धपोत और मिसाइल से लेकर अन्य उपकरण बनाने का अभियान चल रहा है। उत्तर प्रदेश डिफेंस के मैनुफैक्चरिंग के मामले में बहुत आगे जा रहा है। यह इस क्षेत्र को नई पहचान देगा। बुन्देलखण्ड क्षेत्र का तेजी से विकास हो रहा है|बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस वे का निर्माण डिफेंस इण्डस्ट्रियल कॉरिडोर का निर्माण बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए लाभप्रद है। जल जीवन मिशन के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड तथा विन्ध्य क्षेत्र में हर घर नल योजना प्रारम्भ की गयी है। एक्सप्रेस-वे के किनारों पर औद्योगिक क्लस्टर विकसित की परियोजना प्रगति पर है। कुछ दिन पहले ही रक्षा मंत्री ने उत्तर प्रदेश डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर यूपीडीआईसी में पहली संचालित निजी क्षेत्र की रक्षा विनिर्माण सुविधा का उद्घाटन किया था। रक्षा विनिर्माण सुविधा विमान के इंजन हेलीकॉप्टर इंजन विमानों के लिए संरचनात्मक भागों, ड्रोन और यूएवी, पनडुब्बियों, अल्ट्रा लाइट आर्टिलरी गन, स्पेस लॉन्च व्हीकल और स्ट्रैटेजी सिस्टम आदि का निर्माण करेगी। पांच वर्ष पहले बुंदेलखंड में खनन माफिया भू माफिया और पेशेवर हावी थे। डकैतों की समांतर सत्ता यहां थी। बेटियां और कारोबारी सुरक्षित नहीं थे। हमने इस माहौल को बदला। अब यहां शांति है। सब तरफ सकून है।अब बुंदेलखंड बदल रहा हैं। बुंदेलखंड के हर घर में पानी पहुँचाने की योजना पर कार्य हो रहा है। वर्षों से लंबित पड़ी अर्जुन परियोजना का लोकापर्ण प्रधानमन्त्री ने किया था। यहां के पांच जिलों को उसका लाभ मिलेगा। बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे और डिफेंस कॉरिडोर बन रहा है। एक्सप्रेस वे बनने से यहां उद्योग लगेंगे। यहां के युवाओं को नौकरी और रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। डिफेंस कारिडोर में तोप और लड़ाकू विमान बनेगा। लोगों को रोजगार मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा हमारी सरकार बुंदेलखंड का विकास करने में जुटी है। यहां के गरीबों को आवास,पेंशन,राशन मिल रहा है। यहां पांच वर्षों में बुंदेलखंड के विकास की अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित हुआ। सिंचाई व हर घर नल से जल योजना को अभियान के रूप में संचालित किया गया। कुछ समय पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी महोबा में तीन हजार दो सौ चौसठ करोड़ रुपये से अधिक लागत की नौ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया था। दो हजार छह सौ करोड़ रुपये से अधिक लागत की अर्जुन सहायक परियोजना सहायक सिंचाई परियोजनाओं में भवानी बांध परियोजना, रतौली बांध परियोजना एवं मसगांव चिल्ली स्पिंरकलर सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया था। महोबा में मार्ग सुदृढ़ीकरण, विकासखण्ड कबरई में पेयजल परियोजना, कीरत सागर एवं मदन सागर में पर्यटन विकास की परियोजना तथा इससे यहां के फसल चक्र में व्यापक परिवर्तन आएगा। यहां के कृषक अब ज्वार, बाजरा बोने अथवा खेत खाली छोड़ने के स्थान पर धान, गन्ना, मूंगफली, सरसों, गेहूं आदि की खेती आसानी से कर सकेंगे। इस प्रकार वे अपनी फसल से कहीं ज्यादा पैदावार एवं कहीं ज्यादा उसका मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। डिफेंस कारिडोर के झांसी नोड में पहले प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया। भारत डायनामिक्स लिमिटेड की इकाई का शिलान्यास किया था। दिल्ली स्थित नेशनल वार मेमोरियल में बना नया कियोस्क और एक मोबाइल एप देश को समर्पित किया। इसके साथ ही वह छह मेगावाट के अल्ट्रा मेगा सोलर पावर प्लांट के शिलान्यास, अटल एकता पार्क के लोकार्पण,एनसीसी की सिमुलेटर ट्रेनिंग फैसिलिटी के शुभारंभ सहित अरबों रुपये की योजनाओं की सौगात दी थी।